KANPUR PHILOSOPHERS

ISSN 2348-8301

International Journal of Humanities, Law and Social Sciences Published Biannually by New Archaeological & Genological Society Kanpur India

Vol. VIII, Issue-I, 2021

Index
Kanpur Philosophers Volume-VIII, Issue-I, January – June 2021

Sr. No.	Title	Name of Author	Page No.
18	क्रांतिसिंह नाना पाटील आणि सत्यशोधक चळवळ	डॉ उर्मीला क्षीरसागर	110
19	पारिवारिक जीवन और 'शाल्मली' उपन्यास	श्रीमती माधुरी परशुराम कांबळे प्रा. डॉ. वर्षा सुदिन गायकवाड	113
20	अनुवाद कला का राष्ट्रीय महत्व	डा शोभा एम.पवार	116
21	कृषी पर्यटनः उत्कृष्ट शेतीपुरक व्यवसाय	प्रा. डॉ. के .पी. वाघमारे	119
22	मराठा – पोर्तुगीज संबंधावर एक दृष्टिक्षेप	डॉ. डी. आर. पाटील	123
23	रीटा वेलिणकर –'अस्तित्वभान जपणारी नायिका'	प्रा. सुजाता संजय चोपडे	126
24	विदर्भातील व्यक्तिगत सत्याग्रहातील भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेसच्या कार्यकर्त्यांचा सहभाग	संदीप मारोती महाजन	129
25	समकालीन हिंदी गजल में राजनितिक बोध	प्रा. डा. शहनाज महेमुदशा सय्यद	136
26	दुर्ग एक ऐतिहासिक दृष्टीक्षेपः दुर्ग बांधणीतील महत्वाचे घटक	श्रीम. भोसले सुनिता किसन	140
27	हिंदी कहानी साहित्य में स्त्री–विमर्श	प्रा. डॉ. संजय पिराजी चिदगे	145
28	हिंदी कविता में चित्रित आम आदमी की स्थिति	लेफ्टनंट डॉ.रवींद्र पाटील	148
29	महात्मा फूले यांचे समता विषयक विचार	प्रा.डॉ. विक्रमराव नारायणराव पाटील	151
30	प्राचार्य गो.ग. आगरकरांच्या समाजपरिवर्तनाचे स्वरूप व दिशा	श्री. सुरेश नामदेव दांडगे	155
31	संशोधनात संदर्भ साहित्य व साधनांचा प्रभावी वापर	डॉ. बाजीराव भी. आहिरे डॉ. सुजाता एम. कसबे	165
32	व्हिडीओ गेम खेळणा.या व न खेळणा.या विद्यार्थ्यांमधील	डॉ.प्रा. जी. बी. कांबळे डॉ.प्रा. तेजपाल जगताप	171

Kanpur Philosophers
ISSN 2348-8301
International Journal of humanities, Law and Social Sciences
Published biannually by New Archaeological & Genological Society
Kanpur India

Vol. VIII, Issue I (Summer) 2021

हिंदी कविता में चित्रित आम आदमी की स्थिति

लेफ्टनंट डॉ.रवींद्र पाटील
राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज,
कोल्हापुर.

स्वतंत्रता संग्राम के समय भारतीय जनमानस ने भविष्य को लेकर सुंदर सपना देखा था । वह सपना था रोटी, कपडा और मकान का । आजादी के बाद भी आज तक यह सपना सच नहीं हुआ है । आज आम आदमी की प्रमुख समस्याएँ महंगाई, बेरोजगारी, भूखमरी एवं निर्धनता आदी है । वर्तमान परिवेश में बेकारी और बेरोजगारी की समस्या निरंतर बढती जा राही है । शिक्षित युवा रोजगार के तलाश में निरंतर भटकते जा रहे हैं । किसान और मजदूरों के सपने चकनाचूर हो गएँ हैं । विवेच्य कविता में आम आदमी की विवशता का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत है । भारतीय राजनेता चेहरे पर समाजवादी मुखौटे लगाए हुए हैं , परंतु वास्तव में पुंजीवाद के समर्थक हैं । इसके संदर्भ में जगदीश नारायण श्रीवास्तव लिखते हैं ,

'हमारी समाज का अर्ध-सामंती संस्कार और अर्ध
पूंजीवादी रवैया पूरी चालाकी में लगा हुआ है कि वर्तमान
स्थितिशीलता के विरुद्ध जो भी प्रामाणिक आंदोलन चले,
भीतर ही भीतर उनके मूल मुद्दों में तरतीम करके कुछ
ऐसी स्थिति पैदा कि जाय
की वह व्यवस्था के लिए खतरनाक
होने के वजाय उसके पोषक तत्वों में वदल जाय।'[१]

हिंदी के कवियों ने आम आदमी की स्थिति का यथार्थ अंकल किया है । इसमें निर्धनता, महंगाई, भुख एवं कुपोषण, आर्थिक एवं शारीरिक शोषण, घर-परिवार, विरोध के स्वर आदि बातों का चित्रण प्रस्तुत है ।

१) निर्धनता की स्थिति :

कवियों ने तत्कालीन समाज में स्थित निर्धनता को उठाया है । आजादी के बाद आम आदमी का मोह भंग हुआ । सामान्य जनता हमेशा कमजोर आर्थिक स्थिति से जुझती रही । व्यंग्य कवि 'धुमिल' इस स्थिति पर व्यंग कसते हुए लिखते है,

'चौके में खोयी हुई औरत के हाथ, कुछ भी नहीं देखतें,
वे केवल रोटी बेलते हैं और बेलत रहते हैं ।[२]

सलीम खान के 'इलमदिन' कविता में निर्धनता की स्थिति स्पष्ट रूप से चित्रित हुई है । यह कविता एक धुनकर की अभाव की कथा है । वह दिन रात लगातार मेहनत करने के बावजुद भी उचित मजदूरी नहीं पाता है । परिणामत: निर्धनता के कारण भूखें रहना उसकी नियती बन जाती है । उसके मन में हमेशा अशांति फैली रहती है,

'इस तरह कई-कई दिन, उदास रहता है उसका चुल्हा,
भूखे रह जाते है बच्चे, गुस्सें में चीखने लगती है बीवी,
तव उसे पीट देता है इलमदिन ।[३]

मणि मधुकर ने ' लाल कमीज' कविता में आम आदमी और अमीर आदमी के जीवन शैली पर प्रकाश डाला है । कविता का आम आदमी अनेक समस्याओं से ग्रस्त है । तन-मन- ढकने की समस्या से जुझ रहा है । विवेच्य कविता के कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत है,

'एक कद्दावर शरीर, अपनी लाल कमीज को,
दोनों हाथों से, नीचे खींच रहा है ताकि वह उसके घुटनों को ढँकले,
घुटने नंगई की धूप में चमक रहे है ।[४]

विवेच्य कवियों के अलावा जितेंद्र राठौर, रघुवीर सहाय, ऋतुराज, कुलदिप सलिल आदि कवियों के काव्य में निर्धनता की स्थिती दृष्टिगोचर होती है । अत: स्पष्ट है कि आम आदमी के हिस्से में आयी अभाव, पीडा और निर्धनता का चित्रण कविता में हुआ है ।

२)बढती महंगाई का शिकार :

कविता ने बढती महंगाई को भी काव्य में चित्रित किया है । विवेच्य कविता में समाज का शोषित वर्ग बढती महंगाई से जुझता नजर आता है । गरिबी से लडते-लडते आम आदमी के पैर उडखडा उठे है । महंगाई उसके अस्तित्व को मिठाने पर तुली हुई है । नरेंद्र गौड ने 'उसकी एक रात' कविता में बढती महंगाई के कारण जूझ रही मध्यमवर्गीय गृहणी का संघर्ष पूर्ण जीवन का चित्रण इस प्रकार किया है,

'१५ लगेंगे मिट्टी के तेल में, मकान मलिक को जायेंगे,
१०० किराने वाले को, कितावे भी आनी है ।
बची की इस माह, ३० तो चहिए,
साग-सब्जी दिगर में, टल्ला मारती पुछेगी,
अखवार वंद कर दे, उत्तर की प्रतीक्षा किये विना ।[५]

महंगाई ने मध्यमवर्गीय समाज की स्नेह, प्यार, उदारता आदि बातों को छिन ली है । समाज में पत्नी पति को लाड से और अधिक खिलाने के स्थान पर 'उसके थाली पर छोडे गए एकाध लुकमें' की ओर ध्यान आकर्षित करती हुई जमाने की महंगाई की ओर संकेत कर देती है । धूमिल की निम्न इन्हीं पंक्तियाँ इन्हीं बातों की ओर निर्देश करती है,

"मैं जव भी थाली में छोड देता हूं,
एकाध लुकमा,
और थोडा सा खालों के आग्रह के,
वदले धीरे से अनाज की महंगाई,
की वात करती हो ।"[६]

३) रोजी रोटी की समस्या से त्रस्त :

विवेच्य कविता का आम आदमी रोजी रोटी की समस्या से ग्रस्त है । गावों के लोग रोटी की तलाश में शहरों की ओर लगातार बढ रहे हैं, परिणाम के चलते गांव उजड रहे हैं । छोटे-छोटे नगर, महानगर बनते जा रहे हैं । मां बाप की कोरी कल्पना है कि बेटा शहर जाकर उनकी रोटी की समस्या हल कर देगा । उन्हें यह पता नही की उनका बेटा वहाँ पहुंचने पर शोषण, अभाव और प्रताडना के चक्र में फंस जाएगा । वहीं गावों में रोजगार की समस्या अत्यंत भयानक है । गांव के लोग रोजगार न मिलने पर जंगल से लकडी काटकर लाते है, घास के गट्ठर बांधकर लाते हैं, जिन्हें बेचकर वे अपना पेट पालते है,

"भोर होते ही, वर्फिले जल में, तैर जाती है,
जंगल की वेटियाँ, क्योंकी पहाड से रोटी लानी है शाम को,
दामोदर की तेज धार में भी, चट्टानी हिम्मत से,
रोटी लाना है शाम को ।"[७]

इतना ही नहीं गावों के सशक्त लोग रोजगार देने के बदले में स्त्रियों के इज्जत से खिलवाड करते है । अत समकालीन कविता रोजी-रोटी को तलाशते ग्रामीण जनजीवन के मार्मिक चीत्रों से भरी पडी है । केदार-नाथ सिंह की 'मां', अलोक वर्मा, 'बेर बेचती बुधिया', प्रेम शंकर रघुवंशी की 'बर्तन वाली बाई' केदार-नाथ सिंह का 'दर्जी', नरश कुमार उदास की 'चोबी', मनोजकुमार सोनकर की 'सनीचरी', उदय प्रकाश की 'करीगन करानवी' आदी अनेक चरित्र रोजी रोटी की समस्या से जुझते नजर आते हैं ।

४)भूख एवं कुपोषण की समस्या :

विवेच्य कविता में भूख एवं कुपोषण का दय-नीय चित्रण हुआ है । धूमील की 'कुत्ता' कविता भूख की समस्या का निडरता से बखान करता है । भूख आदमी को इस इद तक बेशर्म बना देता है कि वह उसके लिए 'कुत्ते' की तरह दुम हिलाने के लिए विवश हो जाता । भूख ही आदमी को समझौते, दबाव एवं विवशता के मार्ग पर ले जाती है । कभी-कभी विवशता इस हद तक पहुंच जाती है कि मनुष्य बीभत्सना और अभद्रता का रूप धारण करता है । मनोज सोनकर के 'डांगर' कविता में इसी प्रकार का एक दृष्टय है,

"मरी भैस पर, टूट पडे थे भूखे नंगे लोक,

कोई टांग लेकर भाग रहा था, कोई पूँछ मरोड रहा था,
कोई सींग उखाड रहा था,
औरते झगड रही थी, एक दूसरे पर कीचड उछाल रही थी,
छीनरी.....बुजरी.....गडजरी चोटी आदि शब्द ।" ८

अत:भूख एवं कुपोषण से पीडित इन लोगों के लिए मरी भैंस ही 'महाभोज' है । अनायास मिले इस भोज के लिए एक दुसरें से लडने के लिए उतालू हो उठे हैं । टूकडा-टूकडा गोश्त के लिए एक दूसरे से वे जनावरों की तरह लड रहे हैं ।

गोरख पांडेय की 'भूख आदिवासी' कविता में भूख से पीडित आदिवासी स्त्री का चित्रण प्रस्तुत है । आदिवासी स्त्री की अंतडीया खाती है, हिलते हुए सूखे कुल्हें है, भारी बेसुरी आवाज है । वह बात-बात पर रोती है, और अपना पेट दिखाती है,

"रोटी के नक्शे से बडे नहीं होते,
ऊस के लिए देश, धर्म, कानुन और दुनिया ।" ९

उपर्युक्त पंक्तियों में चित्रित स्त्री रोटी के लिए देश, धर्म और कानुन को लांधने के लिए तैयार है । क्योंकि जिंदा रहना उस के लिए सबसे बडा धर्म है ।

५) विद्रोह के स्वर :

विवेच्य कवियों के काव्य में विरोध के स्वर दिखाई देते हैं । समस्त दुर्व्यवस्था के प्रति आम जनता की आवाज को विवेच्य कवियों ने बुलंद किया है । शोषण एवं अत्याचार पर कडा प्रहार किया है । हमेशा ठगनेवाला आज ताकतवर होता जा रहा है । उन्होनें विद्रोह की शक्ति प्राप्त कर ली है वह कहने लगा है,

"अब अनाज खाऊंगा,
वही रोटी जिसके लिए मेरा बाप तरसा था, मेरा दादा तरसा था,
मेरा परदादा तरसा था ।" १०

गोरख पांडेय की 'जमींदार सोचता है' कविता में विद्रोह के स्वर दिखाई देते हैं । कविता का नायक उच्च वर्ग के जमींदारों से न्याय मांगने लगता है । वह निडरता से अपने विचरों को मालिक के सामने व्यक्त करता है । वह सीधा प्रश्न करता है,

"जब हम गेहूं काट दांबकर लाते है, तो अछूत नहीं होतें,
मगर जब आप उसको रोटी चाभते हैं, तो अछूत हो जाते है,
मागने लगता है ।" ११

अत: निष्कर्षत: कहा जात सकता है कि समकालीन कविता में भूस्वामी, पूंजीपति एवं शोषितों के प्रति विवेच्य वर्ग की कहीं धधकती घृणा है, कहीं विरोध के लिए उठ खडे होने के लिए अपने वर्ग को दिया गया खुला आवाहन है, कहीं शोषितों पर सीधे प्रश्नों की बौछार करता हुआ विरोध शब्दांकित हुआ है ।

संदर्भ संकर्त :

१. जगदीश नारायण श्रीवास्तव, समकालीन कविता पर एक बहस, पृष्ठ, १२२
२. धूमिल, कल सुनना मुझे; किस्सा जनतंत्र, पृष्ठ, १६
३. लहर, (कवितांक-२) जनवरी-फरवरी, १९८३, पृष्ठ, ५५
४. मणि मधुकर, बलराम के हजारो नाम, पृष्ठ, ५२
५. उत्तरार्ध; १९८७; बारुद्ध शब्द बन फैलता है : लाल्टू , पृष्ठ, २४
६. धुमिल, प्रजातंत्र : गृह-युद्ध, पृष्ठ, ३८
७. उत्तरगाथा; जनवरी-मार्च १९८४, जंगलू की बेटीयां, ब्रदी नारायण, पृष्ठ, ४९
८. मनोज सोनकर, शोषितनामा : डांगर, पृष्ठ, १६
९. गोरखनाथ पांडेय, भूख आदिवासी : जागते रहो सोनेवालों, पृष्ठ, ८४
१०. मनोज सोनकर, शोषितनामा : 'धुरहू का घोषणा पत्र' पृष्ठ, ९७
११. गोरखनाथ पांडेय, 'भूख आदिवासी : जागते रहो सोनेवालों, पृष्ठ, ७२